13

क्रूस से जुड़े छह आश्चर्यकर्म

मत्ती 27:45-54; मरकुस 15:33-39; लूका 23:44-47

''और देखो, मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया: और धरती डोल गई और चट्टानें तड़क गईं। और कब्रें खुल गईं; और सोए हुए पवित्र लोगों की बहुत लोथें जी उठीं'' (मत्ती 27:51, 52)।

यीशु को ठुकराने के प्रति यहूदियों को परमेश्वर ने बार-बार चौकस किया था। विश्वासी न बनने का उनके पास कोई बहाना नहीं था। यहूदियों को पता था कि यीशु परमेश्वर की ओर से है, परन्तु अपनी घृणा और अन्धेपन के कारण उन्होंने उसे मार डालना चुना। पिलातुस तक को मालूम था कि वह कौन है और उसने उसे ''निर्दोष'' ठहराया था (यूहन्ना 18:38)।

विचार करें कि क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले क्या हुआ। बाग में गिरफ़्तारी के समय जब यीशु ने कहा कि ''मैं ही हूं'' तो भीड़ के लोग पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े थे (यूहन्ना 18:6)। इससे ही सारा दाल में काला समझ आ जाता है!

फिर एक सिपाही का कान ठीक किया गया! पतरस ने अपनी तलवार निकाली और मलखुस का कान उड़ा दिया, परन्तु यीशु ने उसे ठीक कर दिया। यीशु के क्रूस पर जाने से पहले यहूदियों के लिए यह अन्तिम आश्चर्यकर्म था। यीशु सब कुछ कर सकता था!

हमें वह आश्चर्यकर्म कभी नहीं भूलना चाहिए, जो हुआ ही नहीं! यीशु ने पतरस से कहा, ''मैं स्वर्गदूतों की पलटनें मंगा सकता हूं, परन्तु मंगवाऊंगा नहीं।'' मत्ती 26:50-56; मरकुस 14:46-50; लूका 22:47-53 और यूहन्ना 18:3-12 बार-बार पढ़ें। यीशु ने इस अवसर का इस्तेमाल पाप के लिए हमारे प्रायश्चित के बलिदान के लिए अपने आप को परमेश्वर के सामने पेश करने के लिए किया।

जो लोग विश्वास नहीं करना चाहते, समय बीतने पर भी वे विश्वास नहीं करेंगे। क्रूस से जुड़े आश्चर्यकर्मों से संसार चकित क्यों नहीं हुआ?

1. अन्धेरा

''और दोपहर होने पर, सारे देश में अन्धियारा छा गया; और तीसरे पहर तक रहा'' (मरकुस

15:33; देखें मत्ती 27:45; लूका 23:44)। यीशु छह घण्टे तक क्रूस पर रहा था। जिस में पहले तीन घण्टे भीड़ के थे, और अन्तिम तीन घण्टे परमेश्वर के थे! अन्धेरा नरक का पूर्वाभास (2 पतरस 2:4; यहूदा 6, 13) और एक यादगार थी कि जो मर रहा है, वह परमेश्वर का पुत्र है।

यह अन्धेरा सूर्यग्रहण नहीं था। ग्रहण कुछ मिनटों के लिए ही लगता है और पूर्णिमा वाले दिन ग्रहण नहीं लग सकता। फसह पूर्णिमा के दिन आता है। यह अन्धकार भेदभरा था, जो मरने वाले तीन लोगों की रुदन और हैरान लोगों की आवाज़ के अलावा खामोशी को बढ़ा रहा था। कलवरी पर होने वाले अपमान ने सूर्य को भी शर्मशार कर दिया था। वहां उपस्थित लोगों को सिर्फ अन्धेरा ही नज़र आ रहा था।

2. परदा

शाम तीन बजे, यीशु ने ऊंचे स्वर से पुकारा। याजक मन्दिर में अपना काम कर रहे थे। उनकी चुन्धियाई हुई आंखों के सामने मन्दिर के पवित्र स्थान और परम पवित्र स्थान को अलग करने वाला परदा ऊपर से लेकर नीचे तक फट गया (मत्ती 27:51; मरकुस 15:38; लूका 23:45)। परमेश्वर अपने आप को सांसारिक मन्दिर में से निकाल रहा था। इसी समय मूसा की व्यवस्था का अन्त हो गया अर्थात याजकाई समाप्त हो गई। हैरानी की बात नहीं है कि बाद में कई याजकों ने सुसमाचार को मान लिया (प्रेरितों 6:7)।

3. भूकम्प

परदा फटने के समय ''धरती कांप गई और चट्टानें तिड़क गईं'' (मत्ती 27:51)। इस भूकम्प से रोमी सिपाही सहम गए (मत्ती 27:54)। पृथ्वी की सबसे ठोस वस्तुएं तिड़क गईं। क्रूस को छोड़ हर चीज़ हिल गई!

4. खुली कब्रें

पहले यहूदियों ने यीशु से चिह्न की मांग की थी। परमेश्वर ने उन्हें क्रूस से जुड़े छह आश्चर्यकर्म दे दिए। चट्टानों का तिड़कना कड़ा बल था; कब्रों का खुलना बेहतरीन डिजाइन था (मत्ती 27:52, 53)। कितना अजीब भूकम्प था; केवल विशेष कब्रें ही खुलीं! ''और भीड़ जो यह देखने को इकट्ठी हुई थी, इस घटना को, देखकर छाती पीटती हुई लौट गई'' (लूका 23:48)। परमेश्वर यहूदियों को अभी भी सिखा रहा था। डांट रहा था और उन तक पहुंच बना रहा था। इसके अलावा यह भी साबित होता है कि पिन्तेकुस्त (प्रेरितों अध्याय 2 में मसीह की कलीसिया के आरम्भ) के दिन की घटनाएं अचानक ही नहीं घटी थीं। पतरस ने सुसमाचार का पहला संदेश, ''जैसा तुम आप ही जानते हो'' (प्रेरितों 2:22) पुष्टि के साथ दिया। उस अवसर से पहले परमेश्वर ने क्रूस के बारे में सोचने के लिए उनको पचास दिन का समय दिया था। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने उनके दोष का समाधान यीशु को बताया था।

5. कब्र के कपड़े

स्त्रियों द्वारा प्रेरितों को यह बताए जाने पर कि यीशु मुर्दों में से जी उठा है, पतरस और यूहन्ना

स्वयं देखने के लिए कब्र की ओर भागे। उन्हें कब्र खाली मिली। यूहन्ना ने कब्र के अन्दर झांक कर देखा कि जी उठे उद्धारकर्त्ता की मखमल की पट्टियां और उसका कफ़न सबूत के रूप में वहां पड़े थे (लूका 24:1-1 2; यूहन्ना 20:1-9)। अन्तिम बात, जो उसके शत्रु चाहते थे, वह खाली कब्र थी। यदि चेले लाश को चुरा ले गए होते तो उन्होंने उसका कफ़न नहीं उतारना था। शत्रुओं ने कफ़न उतारने में समय बर्बाद नहीं करना था। कफ़न यूहन्ना के लिए बड़ा सबूत था। पहला विश्वास करने वाला वही था। (देखें यूहन्ना 20:8.) हमें भी इस पर तर्कसंगत विचार अवश्य करना चाहिए।

6. जी उठे पवित्र लोग

शुक्रवार वाले दिन क्रबें खुल गईं (मत्ती 27:50-53)। जी उठे पवित्र लोग[1] रविवार से पहले यरूशलेम में नहीं गए। रीति के अनुसार शुद्ध रहने के लिए यहूदी लोग चहेतों का स्वागत नहीं कर सकते थे। कितनी यादगारी घटना है! आप वहां होते तो क्या करते?

क्रूस से जुड़े छह आश्चर्यकर्मों से यह सबूत मिलता है कि क्रूस पर चढ़ाए जाने वाला परमेश्वर का प्रिय पुत्र था। उनसे निर्विवाद सबूत मिलता है। जो भी ... अर्थात नये नियम के लेखकों पर विश्वास करता है, उसके लिए अद्‌भुत आश्चर्यकर्मों पर विश्वास करना ज़रूरी है।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणी

''पवित्र लोग'' उन्हें कहा गया है, जिन्हें पवित्र जीवन जीने के लिए अलग किया गया है (देखें 1 कुरिन्थियों 1:2)। नये नियम में सब मसीही लोगों को ''पवित्र लोग'' या ''संत'' कहा गया है।